इकाई 4 संरचनात्मक भाषाविज्ञान

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य
4.1 प्रस्तावना
4.2 फर्दिनांद द सस्युर (1857-1913)
4.3 लियोनार्ड ब्लूमफ़ील्ड (1887-1949)
4.4 संरचनात्मक भाषाविज्ञान में विश्लेषण की प्रक्रिया
4.5 टैग्मीमिक्स और सिस्टिमिक व्याकरण
4.6 सारांश
4.7 अभ्यास प्रश्न

4.0 उद्देश्य

इस इकाई में 20वीं सदी के आरंभ में यूरोप तथा अमेरीका में संरचनात्मक भाषाविज्ञान के आविर्भाव तथा व्यापक प्रसार की चर्चा की जा रही है। संरचनात्मक अध्ययन व्यवहारवादी मनोविज्ञान पर आधारित है, जो केवल प्रत्यक्ष व्यवहार की प्रक्रिया को अध्ययन की वस्तु मानता है और उसके पीछे निहित मानसिक आधार को नकारता है क्योंकि मन की बातों को हम नहीं जान सकते। यह भाषाविज्ञान भाषा के विश्लेषण का एक ढाँचा भी उपस्थित करता है जिससे हम संसार की विभिन्न भाषाओं का समान धरातल पर अध्ययन कर सकें।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- संरचनावाद को परिभाषित कर सकेंगे,
- प्रख्यात भाषावैज्ञानिक सस्युर तथा ब्लूमफ़ील्ड के विचारों की व्याख्या कर सकेंगे,
- संरचनात्मक भाषाविज्ञान के अभिलक्षण बता सकेंगे,
- संरचनात्मक भाषाविज्ञान के सिद्धांतों के आधार पर अपनी भाषा का विश्लेषण कर सकेंगे,
- पाइक के टैग्मीमिक्स तथा हैलिडे के सिस्टिमिक व्याकरण की मान्यताओं का वर्णन कर सकेंगे, और
- भाषाशिक्षण आदि क्षेत्रों में संरचनात्मक भाषाविज्ञान के प्रभाव की व्याख्या कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

हमने पिछली इकाइयों में पढ़ा कि आधुनिक युग में तुलनात्मक भाषाविज्ञान के कारण भाषाओं के परस्पर संबंध को समझने का आधार मिला। भाषाओं में अंतर के कारण ढूँढ़ते-ढूँढ़ते ऐतिहासिक भाषाविज्ञान का आविर्भाव हुआ। 20वीं सदी के साथ-साथ संरचनात्मक भाषाविज्ञान का उदय हुआ जिसके प्रवर्तक फ्रांस के भाषावैज्ञानिक सस्युर हैं और संरचनात्मक भाषाविज्ञान को विश्लेषण के तौर पर रूप देने वाले अमेरिकी भाषावैज्ञानिक ब्लूमफ़ील्ड हैं।

संरचनावाद आधुनिक युग में वैज्ञानिक अध्ययन का आधार माना जाता है। इस उपागम का प्रारंभ यूरोप में समाजविज्ञान के अध्ययन से शुरू हुआ। मनोविज्ञान का व्यवहारवाद इसका सहयोगी सिद्धांत है। इसके अनुसार जो प्रत्यक्षतः सामने हो उसी का विश्लेषण और वर्णन करना वैज्ञानिक दृष्टि है, अपनी ओर से उसमें व्याख्या के तौर पर कुछ नहीं जोड़ा जाना चाहिए। 19वीं शताब्दी में फ्रैन्ज़ बाओज़ (Franz Boas) तथा उनके शिष्य एडवर्ड सपीर ने

इसी दृष्टि से नृतत्त्वशास्त्र के अध्ययन की शुरुआत की और संस्कृतियों के अध्ययन के साथ सहज ही उनका ध्यान भाषा के अध्ययन पर गया।

एडवर्ड सपीर (1884-1939)

आपका जन्म यूरोप में हुआ और अपने माँ-बाप के साथ आप 1889 में अमेरिका में जा बसे। आप मूलतः नृतत्त्वविज्ञानी हैं और फ्रैन्ज़ बाओज़ के शिष्य रहे हैं। बाद में आपने नृतत्त्वविज्ञान के सिद्धांतों को भाषा के विश्लेषण पर लागू किया। नृतत्त्वविज्ञान के अध्ययन के संदर्भ में आपने अमेरिकी भाषाओं के बोलने वाले सहयोगियों के साथ संयुक्त रूप में कई अमेरिकी (Red Indian) भाषाओं का विश्लेषण किया और हर भाषा का व्याकरण और शब्दकोश तैयार किया।

1921 में आपने Language : An Introduction to the Study of Speech नामक ग्रंथ प्रकाशित किया। इस ग्रंथ में स्वनिम तथा रूप स्वनिमिकी का समावेश किया और अपनी ओर से भाषा विश्लेषण का एक प्रदर्श (model) प्रस्तुत किया। लेकिन इस ग्रंथ की विशेषता इस बात में है कि आपने भाषा और संस्कृति के संबंध पर बल दिया तथा भाषा के रूप पक्ष (form) के वर्णन में सौंदर्य और सुघड़ता का समावेश किया।

आगे चलकर ब्लूमफ़ील्ड ने इस अध्ययन को रूप दिया। इसका अध्ययन आगे करेंगे।

4.2 फर्दिनांद द सस्युर (1857-1913)

सस्युर का जन्म 1857 मे जेनेवा में हुआ था। आपने अपने जीवन काल में कोई ग्रंथ नहीं लिखा था। उन्होंने जेनेवा विश्वविद्यालय में तीन सत्रों में सामान्य भाषाविज्ञान की कक्षाओं में जो व्याख्यान दिये, उन व्याख्यानों के क्लास नोट्स को उनके सहयोगियों और छात्रों ने संगृहीत किया और 1916 में, उनके निधन के बाद पुस्तकाकार प्रकाशित किया। उस ग्रंथ का नाम था Cours de linguistique général. शुरू में उनके ग्रंथ की पहुँच सीमित थी और उसका व्यापक असर भी नहीं हुआ। 1928 से लेकर उस ग्रंथ का अब तक अंग्रेज़ी सहित लगभग 12 भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। उस ग्रंथ ने भाषाविज्ञान के क्षेत्र में क्रांति सी ला दी। सस्युर को अपने योगदान के संदर्भ में संरचनावाद (structuralism) का जनक माना जाता है।

1. समकालिक भाषा अध्ययन की स्थापना

सस्युर के समय तक भाषाविज्ञान के क्षेत्र में अधिकतर ऐतिहासिक भाषाविज्ञान पर ही काम हुआ था। (संदर्भ के लिए पिछली इकाई को देखें) लिखित भाषा के आधार पर भाषाओं में परिवर्तन, ध्वनि संरचना तथा रूप संरचना के आधार पर भाषाओं का अंतःसंबंध और पारिवारिक वर्गीकरण, बोलियों का अध्ययन आदि उस युग के अध्ययन के प्रमुख क्षेत्र थे। दूसरी ओर, हमबोल्ट, स्टाइनटाल, वुन्ट आदि भाषावैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान का सहारा लेकर भाषा के सार्वभौम रूप की संकल्पना स्थापित की। इसी युग में सस्युर ने भाषाविज्ञान की नींव डाली।

अगर हम सस्युर को आधुनिक युग के प्रथम भाषा वैज्ञानिक कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। उनसे पहले के भाषा वैज्ञानिक अधितर ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक भाषाविज्ञान के क्षेत्र में ही कार्य करते थे। ग्रिम और वर्नर के बाद नव वैयाकरणों का संप्रदाय ध्वनि परिवर्तन के नियमों तथा दो भाषाओं की संबद्धता को स्पष्ट करने में लगा था। विश्व की भाषाओं को पारिवारिक दृष्टि से वर्गीकृत करने की दिशा में काफी काम हुआ था। लेकिन भाषा के अध्ययन के लिए सैद्धांतिक आधार निश्चित करने का कोई महत्वपूर्ण कदम नहीं उठा था।

19वीं शताब्दी में विवियम डवाइट हिवटने (1827-1894) ने इस संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण कार्य किया था।

सस्युर का जन्म पेरिस में हुआ था। आपका भाषा विज्ञान के साथ विविध स्तरों पर लंबे समय तक संपर्क रहा। उन्होंने जर्मन परिवार की भाषाएँ पढ़ायीं, तुलनात्मक व्याकरण तथा संस्कृत पढ़ायी और दस वर्ष तक (1881-1891) पेरिस के भाषाविज्ञान समाज के सचिव के पद पर रहे। इस अनुभव के साथ आपने पेरिस विश्वविद्यालय में 1906 से 1911 तक की अवधि में तीन वर्ष सामान्य भाषाविज्ञान नामक विषय पढ़ाया। विषय पढ़ाने के साथ-साथ ही आपने भाषाविज्ञान में मौलिक चिंतन के आधार पर कई नयी मान्यताओं की स्थापना की। उनके विचारों के साथ ही आधुनिक भाषाविज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ। सस्युर ने अपनी ओर से भाषाविज्ञान पर कोई ग्रंथ नहीं लिखा। कक्षाओं में उनके व्याख्यानों का सार ही मरणोपरांत 1915 में 'कोर्स इन जनरल लिंग्वसिटक्स' शीर्षक ग्रंथ के रूप में छपा।

सस्युर ने भाषा विज्ञान की मूल्य संकल्पनाओं के संदर्भ में कुछ वैपरीत्यों को प्रस्तुत किया। ये हैं :

1. भाषा (Language) बनाम वाक् (parole)
2. समकालिकता (Synchrony) तथा ऐतिहासिकता (Diachrony)
3. संरचनागत (Syntagmatic) तथा रूपावलीगता (Paradigmatic) संबंध
4. संकेतक (Signifier) तथा संकेतित (Signified)
5. घटक (Constituent) तथा संरचना (Construction)

भाषा विज्ञान के क्षेत्र में सस्युर की देन अत्यंत महत्वपूर्ण है। अपने ग्रंथ में उन्होंने कई महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रस्तुत किये हैं। यहाँ हम उन्हीं नये सिद्धांतों की चर्चा करेंगे।

वे ग्रंथ के आरंभ में भाषा विज्ञान के अध्ययन के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए उसके व्यक्तिगत प्रयोग के पक्ष और अभिव्यक्ति के स्तर पर सामाजिक प्रयोग के पक्ष पर बल देते हैं। भाषा (Language) स्वतःपूर्ण व्यवस्था है। वह मनुष्य के वाक् व्यवहार (Lang age) का ही एक अंश है। भाषा वाक् व्यवहार की क्षमता से उत्पन्न सामाजिक वस्तु है, जिसमें समाज द्वारा व्यक्तियों के वाक् व्यहवार के लिए अपनायी गयी परंपराएँ भी जुड़ी हुई हैं। उच्चारण के स्तर पर, समझने के स्तर पर वाक् व्यवहार में अंतर रहने पर भी, समाज भाषा की रचना में सामाजिक मान्यता स्थापित करता है, जिससे सभी व्यक्तियों के लिए भाषा समान हो – समान विचारों के लिए समान प्रतीक व्यवस्था। यद्यपि वाक् व्यवहार व्यक्तिगत कौशल भी है और सामाजिक धरातल पर व्यवहृत व्यवस्था भी है, वह बहुआयामी, विविधरूपा है। उसमें हम भाषा की एकात्मकता (unity) के दर्शन नहीं कर सकते। वास्तव में अध्ययन की दृष्टि से वाक्-व्यवहार हमारे लिए महत्वपूर्ण नहीं है – महत्वपूर्ण है भाषा की व्यवस्था स्थापित करने की मनुष्य की शक्ति। वही शक्ति या क्षमता भाषा की रचना में दिखायी पड़ती है। भाषाविज्ञान इस भाषिक रचना का ही अध्ययन करता है।

इसी संदर्भ में सस्युर वाक् (Parole) की संकल्पना को प्रस्तुत करते हैं। यद्यपि भाषा का एक व्यक्तिगत पक्ष होता है और एक सामाजिक अनुबंधन का पक्ष, जिसके द्वारा समाज भाषा की व्यवस्था को कायम करता है, भाषा का प्रचालन (Execution) या उत्पादन व्यक्तिगत होता है। व्यक्ति ही भाषा का उत्पादन या अभिव्यक्ति करता है। अभिव्यक्ति सामूहिक नहीं हो सकती। सस्युर उसी व्यक्तिगत क्षमता को वाक् (Parole) कहते हैं। एक भाषा समुदाय के सारे व्यक्तियों के मन में अंकित व्यवस्था की सामूहिक राशि ही भाषा है। उस राशि से समाज के सदस्य वाक् व्यवहार के अर्जित कौशल द्वारा अपने मस्तिष्क में भाषिक व्यवस्था को अंकित करते हैं। किसी एक व्यक्ति में पूरी भाषा नहीं होती, क्योंकि

भाषा समाज की वस्तु है। इसकी तुलना में एक व्यक्तिगत क्षमता है – स्वैच्छिक तथा व्यक्तिगत प्रतिभा से पूरित। वाक् के अध्ययन में यही देखना होगा कि व्यक्ति किस तरह भाषिक व्यवस्था के आधार पर अपने विचारों को अभिव्यक्ति देता है।

भाषा, वाक् व्यवहार तथा वाक् को इस चर्चा के उपरांत सस्युर सार रूप में इन्हें निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत करते हैं :

1. भाषा वाक व्यवहार के विविध तथा व्यापक नमूनों के बीच से प्रकट सुनिश्चित व्यवस्था है। भाषा सामाजिक वस्तु है और व्यक्ति भाषा को बना या बदल नहीं सकता। व्यक्ति समाज में व्यवहार द्वारा भाषा को अर्जित करता है।
2. हम भाषा का ही अध्ययन कर सकते हैं, वाक व्यवहार का नहीं।
3. भाषा प्रतीकों की व्यवस्था है, जिसमें अर्थ और ध्वनि-बिंबों का संयोजन है।
4. भाषा मूर्त है – इंद्रियगोचर वाक व्यवहार की तरह क्योंकि इसमें भाषिक प्रतीकों का अध्ययन होता है। ये प्रतीक भी अमूर्त नहीं हैं, बल्कि समाज ने यादृच्छिक रूप से इन्हें अर्थ प्रदान किया है। हम ध्वनि बिंबों को भी इसी तरह दृश्यमान बिंबों (लिखित भाषा) के रूप में मूर्त रूप से दिखा सकते हैं। इस कारण ही भाषा का अध्ययन करना हमारे लिए संभव होता है।

2. समकालिक (Synchronic) **तथा ऐतिहासिक** (Diachronic) **भाषाविज्ञान**

सस्युर ने ही सबसे पहले भाषा के समकालिक अध्ययन और ऐतिहासिक क्रम में परिवर्तन आदि को ध्यान में रखते हुए भाषाविज्ञान की दो विशिष्ट शाखाओं का प्रवर्तन किया। समकालिक अध्ययन के लिए उन्होंने भाषास्थिति (एक निश्चित तथा संक्षिप्त कालावधि) जिसमें भाषा को लगभग स्थायी मानकर अध्ययन किया जा सके) का सहारा लिया।

इकाई (Unit) : समकालिक भाषाविज्ञान में प्रतीकों तथा उनके संबंधों का अध्ययन किया जाता है। भाषिक प्रतीक उभयांगी हैं – हर प्रतीक का एक ध्वनि बिंब होता है और प्रत्यय (Concept) भाषा प्रतीकों की व्यवस्था (शृंखला आदि) ही भाषा है। हमें भाषा की इकाइयों को अलग करना होगा, जिससे भाषा का अध्ययन कर सकें। जैसे, उक्ति अपने में मात्र उच्चरित ध्वनियों की शृंखला है। लेकिन इन उच्चारण खंडों को कैसे पहचानें, अलग करें? हम सिर्फ़ भौतिक आधार पर ध्वनियों को अलग नहीं कर सकते। ध्वनियों को इकाइयों में खंडित करने के लिए अर्थ और प्रकार्य का सहारा लेना होगा। ध्वनियों के परिवेश के कारण हम उच्चारण की शृंखला में प्रकार्यात्मक खंडों को पहचान सकते हैं। इसी तरह उच्चारण खंड 'कर रहा हूँ' में हम 'खा रहा हूँ' की तुलना से 'कर', 'खा' को अलग कर सकते हैं। 'हा हूँ' अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि खाता हूँ की तुलना से हम जानते हैं कि 'हा हूँ' का भाषिक मूल्य नहीं है।

मूल्य (Value) : इसी चर्चा के उपरांत हम मूल्य की संकल्पना को ले सकते हैं। भाषा के दो पक्ष हैं – ध्वनि-बिंब तथा कथ्य। दोनों अविभाज्य हैं – एक सिक्के के दो पक्षों की तरह। दोनों के संयोजन से भाषिक 'रूप' बनता है। हर भाषिक रूप का अपने परिवेश में मूल्य होता है। हिंदी का बहुवचन संस्कृत बहुवचन के समान नहीं है। चूँकि संस्कृत में द्विवचन भी है, दोनों के मूल्यों में अंतर होगा। पूरी व्यवस्था के संदर्भ में ही मूल्य के तात्पर्य को समझा जा सकता है। सस्युर ने मूल्य को व्याख्यायित करते हुए एक महत्वपूर्ण सिद्धांत दिया जो परवर्ती संरचनात्मक भाषाविज्ञान का आधार बना। वह है व्यतिरेक। /त/ का उच्चारण वक्ता /t/ की तरह से करे तो भी उसका मूल्य वही होगा – स्वनिम /त/ का जो अन्य स्वनिम /ट/, /ल/ आदि के संदर्भ में प्रकार्यात्मक है। स्वनिम (Phoneme) की स्थापना करके सस्युर ने भाषा व्यवस्था के विश्लेषण के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने रूपिम (morpheme) का उल्लेख नहीं किया है, लेकिन रूप से लेकर वाक्य तक को

इकाइयों को उन्होंने प्रतीक (sign) के व्यापक संदर्भ में देखा था। "भाषा की प्रविधि" (Mechanisms of Language) "व्याकरण तथा उसके अंग" शीर्षक अध्यायों में उन्होंने समकालिक भाषाविज्ञान के अंतर्गत भाषा की संरचना के अध्ययन का विस्तृत विधिविज्ञान प्रस्तुत किया है।

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान शीर्षक भाग में सस्युर ने भाषा परिवर्तन के सादृश्य आदि कारण, भाषा विभेद के भौगोलिक आधार, पूर्व भाषा (Proto type) तथा भाषा पुर्नगठन (Reconstruction) आदि संकल्पनाओं की चर्चा तो की ही है, ऐतिहासिक भाषाविज्ञान के अध्ययन के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण योगदान भी किया है। आपके अनुसार ध्वनिगत परिवर्तन मात्र उच्चारण में परिवर्तन नहीं है। मूल्य आदि पहले कही नयी मान्यताओं के संदर्भ में कह सकते हैं कि ध्वनि परिवर्तन भाषा की व्यवस्था या संरचना में परिवर्तन कर देता है।

संरचनात्मक एकात्मकता : जब हम 'बचपन' कहते हैं तो दो किन्हीं खंडों को साथ नहीं रखते, बल्कि एक बृहत् संरचना के दो घटकों को देखते हैं जहाँ दोनों का अर्थ एक दूसरे पर निर्भर है और कुल मिलाकर संरचना का एक अर्थ भी है। इसी को सस्युर संरचनात्मक एकात्मकता (Syntagmatic Solidarity) कहते हैं। इस तरह संरचना-घटक को एकात्मकता न केवल शब्दों में, बल्कि भाषा की समस्त संरचनाओं में देखी जा सकती है।

वे कुल मिलाकर भाषा को संरचनागत संबंधों और रूपावलीगत संबंधों के उत्पाद (Product) के रूप में देखते हैं। एक तरफ मस्तिष्क में विभिन्न संरचना प्रकार हैं और दूसरी तरफ संरचना के घटकों में वैकल्पिक रूप में आने वाले शब्द या रूपावलियाँ (Paradigms) हैं। हर स्थिति में व्यक्ति दोनों प्रकार के व्यतिरेकों के संदर्भ में सही संरचना और घटक तत्व चुनता है।

3. संरचनागत (Syntagnatic) तथा रूपावलीगत (Associative) संबंध

जब हम भाषा बोलते हैं तो ध्वनियों और शब्दों को एक शृंखला के रूप में उच्चारित करते हैं। यह एक संरचना (Syntagm) है। संरचना में दो या अधिक भाषिक रूप या इकाइयाँ होती हैं। 'समता' में 'सम', 'ता' दो रूप हैं, 'अच्छा लड़का' में दो शब्द हैं, "अगर तुम आ ओगे, तो हम साथ चलेंगे" में दो उपवाक्य हैं। ये तीनों अलग-अलग स्तरों पर संरचनाएँ हैं। संरचना में आने वाले हर घटक या इकाई का व्यतिरेक से मूल्य है। जैसे 'समता' में 'सम' का मूल्य परवर्ती 'ता' के व्यतिरेक के कारण है। साथ ही संरचना के घटकों का दूसरे घटकों से रूप संबंध भी होता है। जैसे समता से हम 'समत्व' 'समभाव' आदि शब्दों की बात सोच सकते हैं या 'ममता, लघुता' आदि की याद कर सकते हैं। इस तरह का संबंध शृंखला में नहीं होता, बल्कि मन में होता है। सस्युर रूपावलीगत के अंतर्गत सहसंबंध को भी लेते हैं और रूपावलीगत (Paradigmatic) संबंध को भी।

संरचनागत संबंध पूरी रचना के संदर्भ में है, जो उच्चरित वाक्य में प्रकट होता है। क्या उच्चारण के स्तर पर या वाक् व्यवहार के स्तर पर उच्चरित वाक्य में हम भाषा की रचना ढूँढ़ सकते हैं? इस संदर्भ में ही सस्युर ने भाषा की संरचनाओं के प्रकारों (types) की चर्चा की है। हम उच्चरित वाक्यों को भाषा के किन्हीं सीमित, पूर्व निर्धारित रचना-प्रकारों में देख सकते हैं। यही भाषा अध्ययन का विषय बनती है। वे प्रकारों से भिन्न वैयक्तिक उक्तियों के महत्व को भी स्वीकार करते हैं।

4. सस्युर के अनुसार भाषा प्रतीकों की व्यवस्था

हर प्रतीक के दो अंग होते हैं – ध्वनि-बिंब तथा अर्थ। भाषा एक सामाजिक संस्था है अर्थात् समाज इन प्रतीकों से वाक व्यवहार द्वारा संप्रेषण करता है। इन प्रतीकों के बारे में अध्ययन करने वाले विज्ञान को प्रतीक विज्ञान (Semiology) कहा जा सकता है। अगर हम

प्रतीकविज्ञान का आरंभ सस्युर से मानें तो गलत नहीं होगा। वे भाषाविज्ञान को प्रतीकविज्ञान के अंतर्गत रखते हैं। भाषाविज्ञान का संबंध समाजविज्ञान से है, प्रतीकविज्ञान का मनोविज्ञान से। लेकिन दोनों विज्ञान कुल मिलाकर अर्थ संप्रेषण की रचना तथा प्रक्रिया पर प्रकाश डालेंगे।

हम प्रतीकों की रचना के बारे में पढ़ेंगे, जिससे अर्थ के संबंध में सस्युर की मान्यताओं का परिचय मिल सके। प्रतीक मनोवैज्ञानिक वस्तु है जिसके दो अंग हैं – प्रत्यय (concept) या संकेतित (Signifier), ध्वनि-बिंब (Sound image) या संकेतक (Signified) वे इसे ध्वनियाँ नहीं, ध्वनि-बिंब कहते हैं, क्योंकि हम बिना उच्चारण ये भाषा में चिंतन करते हैं।

प्रतीक यादृच्छिक होता है। अर्थात् ध्वनि-बिंब और प्रत्यय का संबंध यादृच्छिक होता है। प्रत्यय से नया ध्वनि-बिंब अस्तितव में आ सकता है, ध्वनि-बिंब से नया प्रत्यय सूचित हो सकता है। सस्युर चूँकि पूरी भाषा को प्रतीकों को व्यवस्था कहते हैं, यादृच्छिकता का सिद्धांत समस्त भाषा के परिवर्तनों की व्याख्या में सहायक है। यादृच्छिकता का तात्पर्य व्यवहार में व्यक्ति की स्वच्छंदता नहीं है। यादृच्छिकता उस सामाजिक बंधन का ही दूसरा नाम है जिसेस भाषा सामाजिक वस्तु बनती है। जब कि भाषा में ऐसी यादृच्छिकता नहीं है, बल्कि तार्किक संगति और संगठित व्यवस्था है। इन दोनों के कारण ही भाषा में कई शताब्दियों तक भी अधिक परिवर्तन नहीं होता।

लेकिन जो परिवर्तन होता है, वह यादृच्छिकता के क्षेत्र में अधिक (स्पष्ट शब्दों में, भाषा की शब्दावली में अधिक) और व्यवस्था में कम होता है। इसका कारण यह है कि भाषा समुदाय सामाजिक स्तर पर भाषा को सुरक्षित रखने का कार्य करता है और पीढ़ी दर पीढ़ी उसे आगे बढ़ाता है। मनोवैज्ञानिक स्तर पर हर भाषा समुदाय तार्किक दृष्टि से भाषा को हमेशा और व्यवस्थित करने का यत्न करता रहता है। इन दो प्रवृत्तियों के बीच भाषा धीरे-धीरे बदलती जाती है। लेकिन यह परिवर्तन आकस्मिक नहीं हो सकता। समय की गति के साथ ही हो सकता है।

5. घटक तथा रचना के संबंध के बारे में हम ऊपर देख चुके हैं।

4.3 लियोनार्ड ब्लूमफ़ील्ड (1887-1949)

ब्लूमफ़ील्ड संरचनात्मक भाषाविज्ञान के प्रवर्तक हैं, जो भाषाविज्ञान के क्षेत्र में 1930 से 1960 तक स्थापित था। वे व्यवहारवादी (Behaviorist) हैं और भाषा को समाज का उत्पाद मानते हैं। भाषा के अध्ययन के लिए उन्होंने प्रेरणा (stimulus) और प्रतिक्रिया (response) को आधार बनाया और भाषा विश्लेषण के लिए मन के पक्ष यानी भाषा के आर्थिक पक्ष को अनुपयुक्त बताया। किसी भाषाई वस्तु का सही परिप्रेक्ष्य में वांछित प्रतिक्रिया प्राप्त होना ही उसका वास्तव में अर्थ है। इसलिए उन्होंने भाषिक इकाइयों के अर्थ को विश्लेषण का आधार बनाना आवश्यक नहीं समझा।

ब्लूमफ़ील्ड उन अमेरिकी भाषावैज्ञानिकों की परंपरा में आते हैं जो नृतत्व विज्ञान (Anthropology) को नयी धारा के संदर्भ में अज्ञात संस्कृतियों तथा भाषाओं के अध्ययन के लिए एक नयी पद्धति की खोज में थे। मनोविज्ञान का व्यवहारवाद (Behaviourism) तथा दर्शन का प्रत्यक्षवाद (Empiricism) इस नये अध्ययन का आधार बना। जो प्रत्यक्षतः सामने है उसी को अध्ययन का आधार मानना तथा उसी के संदर्भ में वर्णन प्रस्तुत करना इस पद्धति का लक्ष्य है। इस मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक आधार पर भाषाओं तथा समाज

विज्ञान आदि क्षेत्रों में अध्ययन की एक नयी शाखा खुली जिसे संरचनात्मक उपागम (Structuralistic approach) कह सकते हैं। संरचनात्मक अध्ययन प्रत्यक्ष तथ्यों का ही विश्लेषण करता है और प्राप्त सामग्री के आधार पर वर्णन प्रस्तुत करता है।

ब्लूमफ़ील्ड ने 1933 में भाषा (Language) नामक ग्रंथ का प्रणयन किया। उनका भाषिक वर्णन उपर्युक्त मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक आधार पर प्राप्त (प्रेक्षणीय) भाषिक तथ्यों को प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांत पूर्ववर्ती भाषावैज्ञानिक चिंतन से एकदम भिन्न और नया है। इस कारण इस चिंतन का लगभग 25 वर्ष तक विकास हुआ। भाषा की रचना के संदर्भ में उन्होंने सस्युर से कई मान्यताएँ भी ग्रहण कीं।

ब्लूमफ़ील्ड का भाषा विश्लेषण इस आधार पर शुरू होता है कि भाषा मूलतः उच्चरित है। लिखित रूप भाषा नहीं है, बल्कि उच्चरित भाषा को दृश्य रूप प्रदान करने का एक तरीका है। अतः भाषाविज्ञान का अध्ययन उच्चरित भाषा का होगा। भाषा का मानक या सभ्य समाज में व्यवहृत रूप किन्हीं सामाजिक परिस्थितियों के कारण उत्पन्न स्थिति है। वही एकमात्र भाषा नहीं है। सामान्य परिस्थितियों में होने वाला कोई भी वाक् व्यापार भाषा के अध्ययन का विषय हो सकता है।

भाषा समाज में विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है। भाषा एक सामाजिक व्यवहार है। यह व्यवहार अन्य व्यवहारों से भिन्न नहीं है। भाषा-इतर व्यवहार भी संप्रेषण में काम आते हैं। आपको प्यास लगी है। आप 'पानी चाहिए' कह सकते हैं या इशारा कर सकते हैं। श्रोता (या द्रष्टा) 'अभी देता हूँ' कह सकता है या बिना बोले पानी लाकर दे सकता है। इस तरह यह सामान्य व्यवहार है और इसका आधार भाषिक है या भाषेतर। हम व्यवहार के रूप में भाषा को देख सकते हैं और अध्ययन कर सकते हैं।

हमने इस बात की चर्चा की थी कि ब्लूमफ़ील्ड के अनुसार भाषा के अध्ययन के लिए मन में अंकित अर्थ को जानने की आवश्यकता नहीं क्योंकि हम नहीं जानते कि मन में क्या होता है। मन की प्रक्रिया हमारे निरीक्षण और विश्लेषण के बाहर की चीज़ है। लेकिन भाषा का व्यवहार हमारे लिए निरीक्षणीय वस्तु है, दृश्यमान या श्रव्यमान है। इसीलिए वे प्रत्यक्ष (उच्चरित) भाषा वस्तु को ही अपने अध्ययन का विषय मानते हैं।

सामान्य व्यवहार में दो घटनाएँ एक घटना क्रम में देखी जा सकती हैं। पानी के लिए इशारा करना पहली घटना या व्यापार है, दूसरे व्यक्ति का पानी ला देना प्रभावित व्यापार है। पहला व्यापार प्रेरण है, दूसरा प्रतिक्रिया। इसी तरह एक वाक्य व्यापार को देखिए :

क. आपका नाम क्या है?
ख. मेरा नाम ..... है।

इसमें पहली उक्ति प्रेरणा है दूसरी प्रतिक्रिया। दूसरे कथन से प्रभावित एक और उक्ति हो सकती है।

क. आपके नाम का अर्थ क्या है?

यहाँ दूसरे व्यक्ति की प्रतिक्रिया पहले व्यक्ति के लिए प्रेरणा बनी। इस तरह एक लंबा वार्तालाप प्रेरणा और प्रतिक्रिया की शृंखला के रूप में देखा जा सकता है :

प्रेरणा → प्रतिक्रिया
प्रेरणा → प्रतिक्रिया
प्रेरणा → प्रतिक्रिया आदि।

प्रेरणा की सहज प्रतिक्रिया ही उसका वास्तविक अर्थ है। जैसे "आपका नाम क्या है" का उत्तर "मेज़ पर एक किताब है" नहीं हो सकता। अर्थात् हम भाषा के अर्थ या प्रकार्य को सही अभिव्यक्तियों में ही देख सकते हैं। बालक सही स्थिति में सही प्रतिक्रिया को देखता है और भाषा सीखता है। इस व्यवहार को भाषावैज्ञानिक देखता है और भाषा का विश्लेषण करता है।

सामान्य व्यवहारों की तुलना में भाषा व्यवहार की कुछ विशेषताएँ हैं। यहाँ संकेत उच्चरित ध्वनियों से बने हैं। अर्थात् भाषावैज्ञानिक के लिए निरीक्षण योग्य वस्तु मात्र उच्चरित ध्वनियाँ हैं। ध्वनियाँ प्रेरणा नहीं है, बल्कि ध्वनियों से निर्मित उक्तियाँ संकेत व्यवस्था में सार्थक हैं। किस तरह ध्वनियों से अर्थ देने वाली उक्तियों का निर्माण होता है, यह देखना ही भाषा के अध्ययन का लक्ष्य है। प्राणी भी ध्वनियों से अर्थ (लेकिन उनके संकेतों और अर्थों में एक-एक का संबंध है) संप्रेषण करते हैं। ये संकेत सीमित होते हैं अतः अर्थ भी सीमित होते हैं। मनुष्य सीमित ध्वनियों से अत्यंत जटिल या अमूर्त विषय पर भी सूक्ष्मता से अर्थ की अभिव्यक्ति करता है। यह भाषा की जटिल व्यवस्था के कारण ही संभव है। यह व्यवस्था ही भाषा का विज्ञान है। न केवल मनुष्य भाषा का अभिव्यक्ति के लिए प्रयोग करता है, बल्कि भाषा के अन्य कई अभिलक्षण हैं। भाषा वस्तु जगत से अलग होती है। भूख न हो तो भी व्यक्ति 'भूख लगी है' कहता है। इस कथन की भी सार्थकता है। भाषा संदर्भ से अलग होती है। आप सिर्फ एक श्रोता को ही नहीं, पूरे देश को संबोधित कर सकते हैं। भाषा वास्तविक व्यवहार से अलग हो सकती है। भाषा में चिंतन इसका उदाहरण है। कोई व्यक्ति बिना कार्य किये उसके पक्ष-विपक्ष पर विचार करके निर्णय कर सकता है। इस दृष्टि से भाषा न केवल व्यवस्था में जटिल है, बल्कि व्यवहार में बहुमुखी है।

भाषा सामाजिक वस्तु है। एक भाषा समुदाय के लोग विचारों के संप्रेषण के लिए एक भाषा का प्रयोग करते हैं। उस समुदाय के व्यक्ति उस भाषा का समान ज्ञान रखते हैं। अर्थात् सभी व्यक्ति समान ध्वनियों के द्वारा समान अर्थ का संप्रेषण करते हैं। निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि भाषा समुदाय का हर व्यक्ति उस भाषा का सही प्रतिनिधि होता है।

भाषा की परिभाषा तथा प्रकृति की इस महत्वपूर्ण तथा युग प्रवर्तक चर्चा के बाद ब्लूमफ़ील्ड का दूसरा महत्वपूर्ण योगदान है भाषा की संरचना या व्यवस्था की चर्चा। उन्होंने ध्वनियों से लेकर वाक्य तक संरचना का एक अधिक्रम स्थापित किया जिसमें अधिक्रम के स्तर पर भाषिक रूपों से भाषिक संरचनाएँ निर्मित होती हैं। इसे हम उत्तराधिक्रमीय (Taxonomical) भाषाविज्ञान कह सकते हैं। ब्लूमफ़ील्ड ही इस संरचनात्मक भाषाविज्ञान के जनक हैं।

स्वन भाषा की आधार वस्तु है। इसका अध्ययन उच्चारण, हवा में प्रसरण या श्रवण के आधार पर होता है। लेकिन स्वन भाषा की रचना की इकाई नहीं है। रचना की इकाई स्वनिम है, जो दो शब्दों में भेदक इकाई है। इसी से भिन्न अर्थ वाले दो शब्द अलग से पहचाने जाते हैं। स्वनिमविज्ञान भाषा की संरचना के अध्ययन का एक पक्ष है जिसमें वाक स्वनों को स्वनिम नामक अर्थभेदक इकाइयों में व्यवस्थित किया जाता है।

लेकिन स्वनिम सार्थक इकाई नहीं है। भाषा की लघुतम सार्थक इकाई रूप है। रूपिम विज्ञान रूपों को पहचानने, वर्गीकृत करने तथा रूपों से शब्दों से निर्माण का अध्ययन करता है। वाक्य विज्ञान में शब्दों से पदबंध की रचना, पदबंधों से उपवाक्यों की रचना और उपवाक्यों से वाक्यों की रचना का अध्ययन किया जाता है। इस तरह स्वनिम विज्ञान, रूप तथा वाक्य विज्ञान कुल मिलाकर भाषा का व्याकरण कहे जाते हैं। इसे उत्तराधिक्रमीय व्याकरण या भाषावैज्ञानिक व्याकरण कह सकते हैं।

4.4 संरचनात्मक भाषाविज्ञान में विश्लेषण की प्रक्रिया

हर भाषा में भाषिक रूप (Linguistic forms) होते हैं। ये भाषिक रूप अर्थभेदक इकाई स्वनिमों से निर्मित होते हैं। भाषिक रूप के उच्चारण द्वारा वक्ता श्रोता को किसी स्थिति में किसी विशिष्ट प्रकार की प्रतिक्रिया के लिए प्रेरित करता है। वह स्थिति या प्रसंग तथा वह प्रक्रिया – ये ही दोनों उक्त भाषिक रूप के भाषिक अर्थ (Linguistic meaning) हैं। दो भिन्न रचनाओं में समान प्रकार्य वाला अंश एक भाषिक रूप हैं, जैसे 'पढ़ा', 'देखा' में /आ/ है। वह एक भाषिक रूप है। वैसे कुछ भाषिक रूप (कपड़ा, लड़का) आदि किसी बृहत्तर रचना में हमेशा न आएँ, तो इन्हें रूप-वर्ग के सिद्धांत से पहचान सकते हैं। इस तरह हर भाषिक रूप को हम ऊपर के स्तर की रचना का घटक (Constituent) मान सकते हैं। इस अधिक्रम को हम निम्नलिखित आरेख द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं :

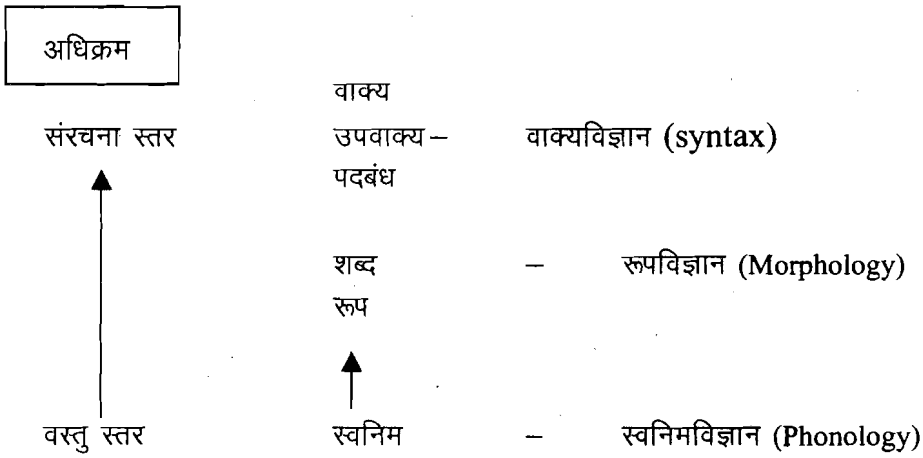

हर स्तर पर संरचना होती है। अर्थात् वाक्य एक या एक से अधिक उपवाक्यों से निर्मित होता है। यहाँ वाक्य संरचना है, उपवाक्य घटक। हर उपवाक्य एक या अधिक पदबंधों से निर्मित होता है। यहाँ उपवाक्य और पदबंध क्रमशः संरचना और घटक हैं। इसी तरह रूप से लेकर वाक्य तक संरचना का एक अधिक्रम है।

ब्लूमफ़ील्ड भाषिक, व्याकरणिक तथा शाब्दिक (Lexical) तीन स्तरों पर रूपों तथा उनके अर्थ को निम्नलिखित ढंग से प्रस्तुत करते हैं :

	भाषिक	**व्याकरणिक**	**शाब्दिक**
लघुतम अर्थ भेदक इकाई	फ़ोनीम	टैक्सीम	स्वनिम
अन्य सार्थक इकाई	ग्लासीम	टैग्मीम	रूपिम
(उसका अर्थ)	(नोईम)	(एपीसेमीम)	(सेमीम)
अन्य संरचित इकाइयाँ	भाषिक रूप	व्याकरणिक रूप	शाब्दिक रूप
(उनका अर्थ)	(भाषिक अर्थ)	(व्याकरणरिक अर्थ)	(शाब्दिक अर्थ)

भाषा की रचना में रूपों के संदर्भ में वे दो परिभाषाएँ प्रस्तुत करते हैं – व्याकरणिक प्रकार्य और रूप वर्ग। हर शाब्दिक इकाई की अपनी व्याकरणिक संरचना भी होती है। अर्थात् वाक्य में या किसी संरचना में उसका अपना व्याकरणिक प्रकार्य होता है। जैसे कोई संज्ञा शब्द वाक्य में कर्ता या कर्म के स्थान पर आता है। जो शाब्दिक रूप समान व्याकरणिक प्रकार्य रखते हैं, एक रूप-वर्ग (form class) में रखे जा सकते हैं। जैसे सारे सर्वनाम शब्द एक वर्ग में आएँगे और ये अन्य संज्ञा शब्दों के साथ मिलकर एक बृहत्तर वर्ग 'संज्ञादि' (Substantives) में आएँगे। हर रूप वर्ग का अपना वर्गार्थ (Class Meaning) होता है। परंपरात्मक व्याकरण इस वर्गार्थ से ही व्याकरण की व्याख्या करने का यत्न करते हैं। जैसे 'संज्ञा किसी व्यक्ति या स्थान या वस्तु का नाम है' आदि। लेकिन वर्गार्थ बहुत स्पष्ट रूप से

हमेशा बताया नहीं जा सकता। वर्गार्थ के साथ रचनाओं के प्रकार्य को भी जानना भाषा के सही विश्लेषण के लिए आवश्यक है।

प्रकार्य और रूप वर्ग की संकल्पनाओं के बाद वे स्थानापत्ति (Substitution) की संकल्पना प्रस्तुत करते हैं। किसी रचना में कोई शाब्दिक या व्याकरणिक रूप दूसरे वर्गीय रूपों को स्थानापन्न करता है। जैसे 'राम काम करता है' में 'वह' आ सकता है। समान वर्गार्थ वाले शब्द स्थानपत्ति वर्ग में आते हैं। स्थानापत्ति से हम भाषा में विभिन्न रूपों को पहचान सकते हैं।

व्याकरणिक व्यवस्था शाब्दिक व्यवरथा के अतिरिक्त हैं। सिर्फ़ रूपों से हम वाक्य को कई व्याकरणिक विशेषताओं की सूचना देते हैं। ब्लूमफ़ील्ड व्याकरणिक संरचना में निम्नलिखित चार टैक्सीमों की कल्पना करते हैं। (1) क्रम (order) : किसी रचना में इकाइयाँ किस क्रम में आ सकती हैं और क्रम परिवर्तन से क्या अर्थ भेद होता है। अंग्रेज़ी वाक्य देखें – (John hit Bill, Bill hit John)। क्रम के कारण इनका अर्थ एकदम विपरीत हो जाता है। (2) अनुतान (Modulation) : हर उच्चारण के साथ अनुतान की विशेषता रहती है। जैसे : राम! (बुलाना) राम ...... (शक, शायद राम हो) राम। (उत्तर)। (3) संधि (Phonetic Modification) : हम बोलते समय रूपों को मिला देते हैं (जैसे कर – लिया → कल्लिया) या रूपों में ध्वनि परिवर्तन कर देते हैं। (उत्+तर → उत्तर), उद्+दंड → उद्दंड)। यह रूपों को पहचानने और विश्लेषित करने के लिए उपयोगी है। (4) चयन (Selection): यह व्याकरणिक इकाइयों में सबसे महत्वपूर्ण है। पूरी रचना का अर्थ इकाई के चयन के कारण बदल जाता है। जैसे (आप) किताब लाइए, (आपको) किताब चाहिए। यहाँ दोनों क्रियाओं में व्याकरणिक अंतर है, जिस कारण कर्ता, शब्द का उचित चयन करना पड़ता है। चयन की संकल्पना से जुड़ी हुई एक महत्वपूर्ण संकल्पना है सन्निकट घटकों की (Immediate Constituents) ।

<table>
<tr><td colspan="7">मैं शाम को घर जा रहा हूँ</td></tr>
<tr><td>मैं</td><td colspan="6">शाम को घर जा रहा हूँ</td></tr>
<tr><td>मैं</td><td colspan="2">शाम को</td><td colspan="4">घर जा रहा हूँ</td></tr>
<tr><td>मैं</td><td colspan="2">शाम को</td><td>घर</td><td colspan="3">जा रहा हूँ</td></tr>
<tr><td>मैं</td><td colspan="2">शाम को</td><td>घर</td><td>जा</td><td colspan="2">रहा हूँ</td></tr>
<tr><td>मैं</td><td>शाम</td><td>को</td><td>घर</td><td>जा</td><td>रहा</td><td>हूँ</td></tr>
</table>

रचना स्तर पर हम चयन के सिद्धांत के आधार पर 'को घर', 'मैं शाम' आदि को एक संरचना नहीं मानते। सन्निकट घटक रचनाओं के विभिन्न स्तरों को पहचानने में हमारी मदद करता है। स्थानापत्ति और चयन दोनों घटकों के विश्लेषण में सहायक है।

ब्लूमफ़ील्ड मानते हैं कि भाषा की कोई भी रचना हो, व्याकरणिक इकाइयों के तथा शाब्दिक इकाइयों के विश्लेषण से हम भाषा की हर रचना का विश्लेषण कर सकते हैं। इसके लिए मन में अंकित (या उक्ति के मूल में विद्यमान) अर्थ को जानने की आवश्यकता नहीं (और यह संभव भी नहीं) बल्कि उक्ति के भाषाई, व्याकरणिक तथा शाब्दिक अर्थ तथा उक्ति की रचना से हम वाक्य का विशेषण कर सकते हैं। ब्लूमफ़ील्ड का भाषा की रचना के संदर्भ में सस्युर से विचार साम्य हैं। प्रमुख अंतर व्यवहारवादी सिद्धांत के कारण है, जहाँ ब्लूमफ़ील्ड उक्ति के अर्थ को भाषा के विश्लेषण से बाहर निकाल देने पर बल देते हैं। लेकिन ब्लूमफ़ील्ड का सिद्धांत अपने मनोवैज्ञानिक आधार के कारण नहीं, बल्कि भाषा की रचना के विश्लेषण की सूक्ष्मता और निश्चितता के कारण बहुत प्रचलित हुआ। उनकी

परंपरा में ज़ेलिग हैरिस, ग्लीसन आदि विद्वानों ने ब्लूमफ़ील्ड के सिद्धांत को अत्यंत वैज्ञानिक आधार पर बढ़ाकर संरचनात्मक भाषाविज्ञान की परंपरा स्थापित की।

4.5 टैग्मीमिक्स और सिस्टिमिक व्याकरण

ध्वनि से वाक्य तक के रचनागत अधिक्रम या ऊर्ध्वाधर क्रम (hierarchy) वाले व्याकरणों को taxonomic grammar कहा जाता है। इसी परंपरा में ब्लूमफ़ील्ड के व्याकरण में सुधार करते हुए दो और विद्वानों ने अपने ढंग से व्याकरण की रूपरेखा प्रस्तुत की।

टैग्मीमिक्स : अमेरिकी वैज्ञानिक केनेथ एल. पाइक (Kenneth L. Pike) ने टैग्मीमिक्स (Tagmemics) नामक उपागम का प्रवर्तन किया। उदाहरण के तौर पर जहाँ ब्लूमफ़ील्ड उपवाक्य को केवल पदबंध के घटकों में विभाजित करते हैं, पाइक पदबंधों को उस जगह आने वाले प्रकार्यात्मक शब्दों की सूची के साथ सूचित करते हैं। जैसे :

कर्ता : संज्ञा पदबंध + *कर्म* : संज्ञा पदबंध + *विधेय* : क्रिया पदबंध

इस तरह स्थान तथा उसमें आने वाले पद (या अन्य भाषिक इकाई) के योग को वे tagmeme कहते हैं। इसी कारण रचना तत्व को स्पष्ट करते हुए वे टैग्मीमीम को एक ओरख में दिखाते हैं जैसे :

Slot	Class	(हिंदी में)	स्थान	वर्ग
Role	Cohesion		प्रकार्य	संगति

स्थान का तात्पर्य है संरचना का वह स्थान जहाँ संरचना का घटक आता है जो संरचना का प्रकार्य सूचित करता है।

वर्ग उन इकाइयों का समूह है जो उस स्थान पर आता है, जैसे कर्ता (संज्ञा पदबंध) स्थान पर संज्ञा शब्द।

प्रकार्य उस घटक (जैसे कर्ता) की भूमिका की आर्थी सूचना देता है जैसे 'खाया' का कर्ता actor है, 'पाया' का कर्ता beneficiary (प्राप्तकर्ता) है।

संगति में अन्विति आदि वाक्यगत विशेषताएँ सूचित की जाती हैं।

पाइक भाषाविज्ञान को वाक्य विश्लेषण से व्यापक मानते हैं। उनके अनुसार भाषा विश्लेषण के तीन स्तर हैं – स्वनिमविज्ञान; व्याकरण, जो वाक्य से ऊपर की संरचनाओं (संवाद, भाषण, स्वगत भाषण, पाठांश, पैरा आदि) को भी विश्लेषण में शामिल करता है; और संदर्भ जिसमें परस्पर संप्रेषण, व्यंजित अर्थ, घटना क्रम, अस्मिता आदि कारक जुड़ जाते हैं।

सिस्टमिक व्याकरण (Systemic grammar)

यह भाषाविज्ञान की यूरोपीय शाखा की उपज है, जिसके प्रवर्तक हैलिडे (M.A.K. Halliday) हैं। इस शाखा के मूल स्रोत हैं फर्थ (J.R. Firth) जो भाषा को बहु-प्रकायार्त्मक व्यवस्था मानते हैं। हैलिडे मानते हैं कि भाषा के विश्लेषण में संदर्भ का महत्व है क्योंकि अर्थ संदर्भ का ही प्रकार्य है। इसलिए भाषा के अध्ययन में विविध संदर्भों का अध्ययन आवश्यक है और संदर्भों में भाषा के प्रकार्यों को भी अध्ययन का लक्ष्य बनाया जाना चाहिए। इस संदर्भ में वे अपने व्याकरण का सिस्टमिक – प्रकार्यात्मक व्याकरण भी कहते हैं। हैलिडे भाषाविज्ञान की यूरोपीय शाखा प्रकार्यात्मक व्याकरण (Functional Grammar) के भी स्तंभ हैं। 8

वे भाषा के तीन प्रमुख प्रकार्य मानते हैं :

(i) वैचारिक प्रकार्य (ideational function) : हम भाषा के माध्यम से वस्तुजगत का ज्ञान प्राप्त करते हैं। संरचना भी वास्तविकता को प्रतिबिंबित करती है। अभिकर्ता (agent), अधिकरण आदि कारक इसी वास्तविकता के सूचक हैं। यही भाषा का अनुभवगत/experiential) प्रकार्य भी हैं।

(ii) परस्परता का प्रकार्य (interpersonal fuction) : इससे भाषा के प्रयोग का संदर्भ सूचित होता है। हम उक्ति से सूचना भी दे सकते हैं, आदेश भी।

(iii) पाठगत प्रकार्य (fextnal fuction) : इसके अनुसार वाक्य संदेश संप्रेषण की संरचना है। हम नई सूचना दे रहे हैं या पूर्व सूचना को आधार बनाकर अपनी बात कहते हैं; हम किस बात पर बल दे रहे हैं आदि की चर्चा इसमें होती है।

रूप से वाक्य तक की संरचना का प्रारूप लगभग ब्लूमफ़ील्ड के विवेचन के समान है। हैलिडे मानते हैं कि हर वाक्य के विश्लेषण में उपर्युक्त तीनों प्रकार्यों का विवेचन होना चाहिए।

4.6 सारांश

संरचनात्मक भाषाविज्ञान (structural linguistics) भाषा के अधिक्रमीय (taxonomic) विश्लेषण का प्रमुख उपागम है। इसका लक्ष्य केवल वर्तमान में मौखिक रूप से प्रस्तुत भाषा का अध्ययन है, जो विश्लेषण के लिए न ऐतिहासिक साक्ष्य पर निर्भर है, न मानसिक रूप से निहित कारणों का सहारा लेता है। एक ही काल की भाषा के स्वरूप का अध्ययन करने के कारण इसे एककालिक या समकालिक (synchronic) भाषाविज्ञान कहा जाता है। भाषा का यथातथ्य वर्णन करने के लिए इस उपागम ने एक ढाँचा प्रस्तुत किया है। अपेक्षा की जाती है कि सारी भाषाओं का अध्ययन इसी अधिक्रमीय पद्धति से किया जाए। इसलिए इसे वर्णनात्मक भाषाविज्ञान (descriptive linguistics) भी कहा जाता है। इस पद्धति से लिखे गये भाषा के विश्लेषण को वर्णनात्मक व्याकरण (descriptive grammar) की संज्ञा दी जाती है।

संरचनात्मक भाषाविज्ञान का आविर्भाव सस्युर के ग्रंथ के प्रकाशन से माना जाना चाहिए – लगभग 1915 के आसपास। लेकिन यह 1933 में ब्लूमफ़ील्ड की पुस्तक 'भाषा' के प्रकाशन के साथ ही पूर्ण प्रकाश में आया। तब से लेकर लगभग 1965 तक संरचनात्मक भाषाविज्ञान का ज़ोर था। विश्व की कई भाषाओं का वर्णनात्मक व्याकरण लिखा गया। भाषा को आदत (व्यवहार) मानने तथा आदत द्वारा भाषा सीखने की मान्यता के कारण संरचनात्मक भाषाविज्ञान ने भाषा शिक्षण को भी बहुत प्रभावित किया।

अब हम संक्षेप में इसकी प्रमुख मान्यताओं और कार्यविधि की चर्चा करेंगे।

सस्युर की मान्यताएँ

1. वे संकेतिक अर्थ तथा शब्द (signifier) की इकाई को प्रतीक मानते हैं। भाषा का प्रकार्य प्रतीकों के माध्यम से अमूर्त अर्थ को मूर्त रूप देना है।

2. वे भाषा (Language) तथा वाक् (parole) में अंतर करते हैं। समाज में समस्त व्यक्ति भाषा बोलते हैं, जो वैयक्तिक अंतरों के बावजूद नियमबद्ध रूप में विश्लेषित की जा सकती है। लोगों की उक्तियाँ वाक् के उदाहरण हैं, जो वास्तविक घटना है। वाक् के आधार पर भाषावैज्ञानिक भाषा की व्यवस्था ढूँढ़ते हैं। वाक्य भाषा की इकाई है, उक्ति वाक् की।

3. वे ऐतिहासिक तथा समकालिक भाषाविज्ञान में संबंध देखते हैं।

4. भाषा की रचना के संदर्भ में वे अभिरचनात्मक (syntagmatic) तथा रूपावलीपरक (paradigmatic) संबंधों की चर्चा करते हैं।

ब्लूमफ़ील्ड की मान्यताएँ

1. ब्लूमफ़ील्ड व्यवहारवादी मनोविज्ञान से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। उनके अनुसार भाषा सामाजिक व्यवहार की वस्तु है। भाषा की उक्तियाँ सामाजिक व्यवहार की तरह वाक् व्यापार (speech events) हैं।

2. हर वाक् व्यापार को हम प्रेरण और प्रक्रिया की शृंखला के रूप में देख सकते हैं। प्रेरणा और प्रक्रिया भौतिक हो सकती है या वाचिक।

3. भाषा का बिश्लेषण उक्त व्यापारों के निरीक्षण तथा विश्लेषण के आधार पर हो सकता है। अध्ययन का क्षेत्र सिर्फ़ वाक् व्यापार है। उक्त विश्लेषण और भाषा के वर्णन की प्रक्रिया ही संरचनात्मक या वर्णनात्मक भाषाविज्ञान है।

4. वे वाक्य के अर्थ को सिर्फ इकाइयों की तुलना आदि के संदर्भ को महत्व देते हैं अर्थ का विश्लेषण नहीं करते। उनके अनुसार अर्थ मन में हैं, इस मन के कार्य को नहीं जानते। जो वाक् व्यापार प्रत्यक्षतः सामने है, उसी का अध्ययन हो सकता है। साथ ही, वे सस्यूर के सिद्धांत को मानते हैं।

संरचनात्मक भाषा विज्ञान के गुणधर्म

1. भाषा उच्चरित है। लेखन इसका विस्तार है।

2. भाषाविज्ञान वर्णनात्मक अध्ययन है, प्रमाण सिद्ध है। यह निर्देशात्मक अध्ययन नहीं।

3. भाषाविज्ञान भाषा मात्र का अध्ययन है। विश्लेषण की प्रविधि किसी भी भाषा के अध्ययन के लिए प्रारूप है।

4. भाषा का वर्णन समकालिक है। भाषा का हर वक्ता भाषा का प्रतिनिधि है। किसी एक वक्ता की भाषा का वर्णन भाषा का प्रतिनिधि वर्णन है।

5. भाषा एक व्यवस्था है। इसे वक्ता अभ्यास द्वारा अर्जित करते हैं।

6. भाषा विश्लेषण की प्रविधि की माँग है कि विश्लेषण स्वनों से वाक्य तक जाए।

7. व्यवस्था के रूप में सभी भाषाएँ समान हैं। लेकिन भाषा की व्यवस्था अपनी है।

भाषाओं में व्यवस्था का साम्य-वैषम्य है, लेकिन व्यवस्था की सार्वभौमिकता नहीं है।

संरचनात्मक भाषाविश्लेषण की प्रविधि

1. भाषाई इकाइयों या घटकों से संरचना का निर्माण होता है। इकाइयों से बनी अभिरचना में अभिरचनात्मक (syatapnetic) संबंध है, अभिरचना के स्थानों में इकाइयों में रूपावलिपरक (paradigmatic) संबंध हैं।

2. इकाइयों के वितरण की व्यवस्था निम्न प्रकार हैं :
   (क) एक अभिरचना में एक स्थान पर आने वाली इकाइयों में व्यतिरेकी वितरण है और इनसे भिन्न संरचनाएँ निस्पन्न होती हैं।
   (ख) एक इकाई के दो भिन्न रूप हों और उनसे अभिरचना में स्थान निश्चित (और भिन्न) हों तो यह परिपूरक वितरण (complementary distribution) है।
   (ग) एक इकाई के भिन्न रूप एक ही स्थान में आए और रचना न बदले तो वह मुक्त वितरण है।

3. संरचना के विभिन्न स्थानों में आने वाली इकाइयों को संरचना वर्गों में विभाजित किया जाता है, जैसे पदबंध स्तर पर संज्ञा पदबंध, क्रिया पदबंध आदि। इनके आपस के संबंधों तथा आंतरिक संरचना आदि का विश्लेषण उस रचना को स्पष्ट करता है। रचना के एक स्थान पर आने वाला इकाई के विभिन्न तत्व रूप वर्गों (form classes) में विभाजित किया जाता है। जैसे कर्ता में संज्ञा तथा सर्वनाम दो रूप वर्ग हैं। यहाँ चयन या स्थानापत्ति के आधार की चर्चा कुछ रचना के संदर्भ में की जाती है।

4. अपने उपागम के कारण संरचनात्मक भाषाविज्ञान अधिक्रमिक (taxonomic) है। भाषा की रचना स्तरित है। और हर स्तर की रचना ऊपर की स्तर की रचना construction के लिए संरचक या घटक है। रूप के घटक अर्थ स्तर पर कोई नहीं, वस्तु (substance) के स्तर पर स्वनिम हैं। वाक्य भाषा की सबसे बड़ी इकाई है, यह किसी अन्य रचना का घटक नहीं है।

इस अधिक्रम को निम्नलिखित आरेख द्वारा समझ सकते हैं :

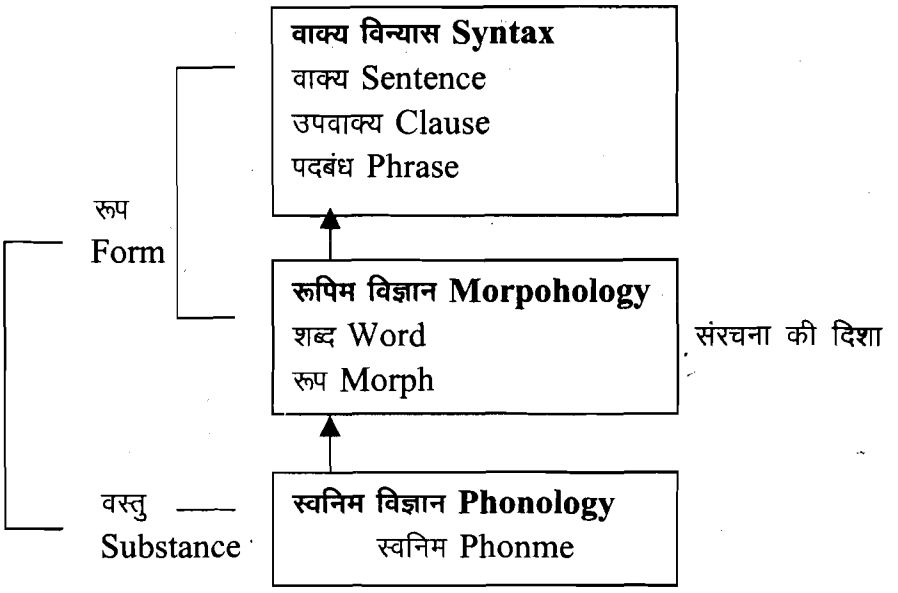

5. यद्यपि अधिक्रम के संदर्भ में हम स्वनिम से वाक्य तक जाते हैं, आधारभूत साँचों की पहचान के लिए रचना के मूल तक पहुँचने के लिए सन्निहित घटक विश्लेषण का आधार लेते हैं।

4.7 अभ्यास प्रश्न

1. निबंधात्मक प्रश्न

(1) संरचनात्मक भाषाविश्लेषण की प्रविधि समझाइए।
(2) सस्युर की मान्यताओं की चर्चा कीजिए।
(3) ब्लूमफ़ील्ड ने भाषा की परिभाषा कैसे की तथा भाषा विश्लेषण की कौन-सी प्रविधि सुझाई?

2. टिप्पणियाँ

(1) संरचनात्मक भाषाविज्ञान के अन्य नाम
(2) अधिक्रमीय (taxonomic) व्याकरण का तात्पर्य
(3) संरचनात्मक भाषाविज्ञान का भाषा शिक्षण पर प्रभाव